श्री चंडिका दळ स्तुतिः

श्री चंडिका दळ स्तुतिः

ॐ नमो भगवति जय जय चामुंडिके, चंडेश्वरि, चंडायुधे, चंडरूपे, तांडवप्रिये, कुंडलीभूतदिङ्नागमंडित गंडस्थले, समस्त जगदंड संहारकारिणि, परे, अनंतानंदरूपे, शिवे, नरशिरोमालालंकृतवक्षःस्थले, महाकपाल मालोज्ज्वल मणिमकुट चूडाबद्ध चंद्रखंडे, महाभीषणि, देवि, परमेश्वरि, ग्रहायुः किल महामाये, षोडशकलापरिवृतोल्लासिते, महादेवासुर समरनिहतरुधिरार्द्रीकृत लंभित तनुकमलोद्भासिताकार संपूर्ण रुधिरशोभित महाकपाल चंद्रांसि निहिता बद्ध्यमान रोमराजी सहित मोहकांची दामोज्ज्वलीकृत नव सारुणी कृत नूपुरप्रज्वलित महीमंडले, महाशंभुरूपे, महाव्याघ्रचर्मांबरधरे, महासर्पयज्ञोपवीतिनि, महाश्मशान भस्मावधूळित सर्वगात्रे, काळि, महाकाळि, कालाग्नि रुद्रकाळि, कालसंकर्षिणि, कालनाशिनि, काळरात्रि, रात्रिसंचारिणि, शवभक्षिणि, नानाभूत प्रेत पिशाचादि गण सहस्र संचारिणि, धगद्धगेत्या भासित मांसखंडे, गात्रविक्षेप कलकल समान कंकाल रूपधारिणि, नानाव्याधि प्रशमनि, सर्वदुष्टशमनि, सर्वदारिद्र्यनाशिनि, मधुमांस रुधिरावसिक्त विलासिनि, सकलसुरासुर गंधर्व यक्ष विद्याधर किन्नर किंपुरुषादिभिः स्तूयमानचरिते, सकलमंत्रतंत्रादि भूताधिकारिणि, सर्वशक्ति प्रधाने, सकललोकभाविनि, सकल दुरित प्रक्षाळिनि, सकललोकैक जननि, ब्रह्माणि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि शंखिनि वाराहि इंद्राणि चामुंडि महालक्ष्मी रूपे, महाविद्ये, योगिनि, योगेश्वरि, चंडिके, महामाये, विश्वेश्वररूपिणि, सर्वाभरणभूषिते, अतल वितल नितल सुतल रसातल तलातल पाताल भूलोक भुवर्लोक सुवर्लोक महर्लोक जनोलोक तपोलोक सत्यलोक चतुर्दश भुवनैक नायिके, ॐ नमः पितामहाय ॐ नमो नारायणाय ॐ नमः शिवायेति सकललोकजाजप्यमाने, ब्रह्म विष्णु शिव दंड कमंडलु कुंडल शंख चक्र गदा परशु शूल पिनाक टंकधारिणि, सरस्वति, पद्मालये, पार्वती, सकल जगत्स्वरूपिणि, महाक्रूरे, प्रसन्नरूपधारिणि, सावित्रि, सर्वमंगळप्रदे, महिषासुरमर्दिनि, कात्यायनि, दुर्गे, निद्रारूपिणि, शर चाप शूल कपाल करवाल खड्ग डमरुकांकुश गदा परशु शक्ति भिंडिवाल तोमर भुशुंडि मुसल मुद्गर प्रास परिघ दंडायुध दोर्दंड सहस्रे, इंद्राग्नि यम निर्ऋति वरुण वायु कुबेरेशान प्रधानशक्ति हेतुभूते, चंद्रार्कवह्निनयने, सप्तद्वीप समुद्रोपर्युपरि व्याप्ते, ईश्वरि, महासचराचर प्रपंचांतरुधिरे, महाप्रभावे, महाकैलास पर्वतोद्यान वनक्षेत्र नदीतीर्थ देवताद्यायतनालंकृत मेदिनी नायिके, वसिष्ठ वामदेवादि सकल मुनिगण वंद्यमान चरणारविंदे, द्विचत्वारिंशद्वर्ण माहात्म्ये, पर्याप्त वेदवेदांगाद्यनेक शास्त्राधारभूते, शब्द ब्रह्ममये, लिपि देवते, मातृकादेवि, चिरं मां रक्ष रक्ष, मम शत्रून् हुंकारेण नाशय नाशय, मम भूत प्रेत पिशाचादीनुच्चाटय उच्चाटय, स्तंभय स्तंभय, समस्त ग्रहान्वशीकुरु वशीकुरु, स्तोभय स्तोभय, उन्मादयोन्मादय, संक्रामय संक्रामय, विध्वंसय विध्वंसय, विमर्दय विमर्दय, विराधय विराधय विद्रावय विद्रावय, सकलारातीन्मूर्ध्नि स्फोटय स्फोटय, मम शत्रून् शीघ्रं मारय मारय, जाग्रत्स्वप्न सुषुप्त्यवस्थास्वस्मांछत्रुमृत्यु ज्वरादि नाना रोगेभ्यो नानाभिचारेभ्यः परकर्म परमंत्र परयंत्र परतंत्र परमंत्रौषध शल्यशून्य क्षुद्रेभ्यः सम्यग्रक्ष रक्ष, ॐ श्रीं ह्रीं, मम सर्वशत्रु प्राणसंहार कारिणि हुं फट् स्वाहा ||इति श्री चंडिका दळ स्तुतिः||